

ys 1841.

l. 5h. 59m. M.  
l. 2h. 42m. E.

| ts. | pl. | r.     | & s. |
|-----|-----|--------|------|
| 59  | II  | 3      | 9    |
| 0   | II  | 4      | 19   |
| 1   | II  | 5      | 20   |
| 2   | II  | 6      | 10   |
| 4   | II  | rises. |      |
| 5   | II  | 6      | 26   |
| 6   | II  | 7      | 40   |
| 7   | II  | 8      | 52   |
| 9   | II  | 10     | 1    |
| 10  | II  | 11     | 9    |
| 11  | II  | morn.  |      |
| 12  | II  | 0      | 16   |
| 13  | II  | 1      | 21   |
| 15  | II  | 2      | 22   |
| 16  | II  | 3      | 19   |
| 17  | II  | 4      | 9    |
| 18  | II  | 4      | 52   |
| 20  | II  | 5      | 28   |
| 21  | II  | 5      | 58   |
| 22  | II  | 6      | 24   |
| 24  | II  | sets.  |      |
| 25  | II  | 7      | 11   |
| 26  | II  | 8      | 16   |
| 28  | II  | 9      | 24   |
| 29  | II  | 10     | 34   |
| 30  | II  | 11     | 46   |
| 32  | II  | morn   |      |
| 33  | II  | 0      | 58   |

ay bring dis-

e that are to  
ours; let us

meet with few  
continually

well: but it is

s the noblest

3. MARCH, Begins on Monday, 3 days. 1831.

PHASES OF THE MOON.

Full Moon, 7d. 8h. 17m. M. | New Moon, 22d. 9h. 21m. E.  
Third Qr., 14d. 9h. 2m. E. | First Qr., 29d. 9h. 45m. E.

| D. DAY | M. WK. | VARIOUS PHENOMENA.               | lis. | Sets. | pl. | r. & s. |
|--------|--------|----------------------------------|------|-------|-----|---------|
| 1      | Mo.    | David. ☉ runs high.              | 6 26 | 5 34  | II  | 2 7     |
| 2      | Tu.    | J. Wesley died 1791.             | 6 24 | 5 36  | II  | 3 9     |
| 3      | We.    | <i>Quite cold.</i>               | 6 23 | 5 37  | II  | 4 1     |
| 4      | Th.    | ♀'s gr. elon. ♂'s gr. elon.      | 6 22 | 5 38  | II  | 4 43    |
| 5      | Fri.   | ☉ ♀.                             | 6 20 | 5 40  | II  | 5 18    |
| 6      | Sat.   | [☉ in per. <i>More snow.</i>     | 6 19 | 5 41  | II  | 5 47    |
| 7      | C.     | 2d Sunday in Lent.               | 6 18 | 5 42  | II  | Rises.  |
| 8      | Mo.    | ♀ sets 9 58. J. SMYTH,           | 6 16 | 5 44  | II  | 7 39    |
| 9      | Tu.    | ☉ ☽ 2. [C. Poet born 1792.       | 6 15 | 5 45  | II  | 8 49    |
| 10     | We.    | ♂ stat. ♂ ☽ ☿                    | 6 14 | 5 46  | II  | 9 58    |
| 11     | Th.    | ♂ stat.                          | 6 12 | 5 48  | II  | 11 5    |
| 12     | Fri.   | Martyr Gregory.                  | 6 11 | 5 49  | II  | morn.   |
| 13     | Sat.   | ☿ discovered 1781.               | 6 10 | 5 50  | II  | 0 10    |
| 14     | C.     | ☉ runs low.                      | 6 9  | 5 52  | II  | 1 9     |
| 15     | Mo.    |                                  | 6 7  | 5 53  | II  | 2 2     |
| 16     | Tu.    | ☉ in apogee.                     | 6 6  | 5 54  | II  | 2 48    |
| 17     | We.    | St. Patrick.                     | 6 4  | 5 56  | II  | 3 26    |
| 18     | Th.    | <i>Rain or</i>                   | 6 3  | 5 57  | II  | 3 58    |
| 19     | Fri.   | ☉ ♀.                             | 6 1  | 5 59  | II  | 4 25    |
| 20     | Sat.   | ☉ enters ♀. Inf. ♂ ☽ ♀.          | 6 0  | 0 0   | II  | 4 49    |
| 21     | C.     | Benedict, Sir I. Newton d. 1727. | 5 59 | 6 1   | II  | 5 12    |
| 22     | Mo.    | Ceylon mis. est. 1814.           | 5 57 | 6 3   | II  | 5 33    |
| 23     | Tu.    | ☉ ☽ ♀.                           | 5 56 | 6 4   | II  | Sets.   |
| 24     | We.    | ♂ rises 8 40.                    | 5 55 | 6 5   | II  | 8 22    |
| 25     | Th.    | Anum B. V. M.                    | 5 53 | 6 7   | II  | 9 35    |
| 26     | Fri.   | ♀ sets 10 14.                    | 5 52 | 6 8   | II  | 10 49   |
| 27     | Sat.   | <i>Unsettled.</i>                | 5 51 | 6 9   | II  | 11 59   |
| 28     | C.     | ☉ runs high.                     | 5 49 | 6 11  | II  | morn.   |
| 29     | Mo.    | <i>Perhaps</i>                   | 5 48 | 6 12  | II  | 1 3     |
| 30     | Tu.    | ♂ south 1 40.                    | 5 47 | 6 13  | II  | 1 58    |
| 31     | We.    | ☉ in perigee.                    | 5 45 | 6 15  | II  | 2 42    |

Let us not expect too much pleasure in this life: no situation is exempt from trouble. The best persons are no doubt, the happiest; but they too have their trials and afflictions.

How greatly do the kind offices of a dutiful and affectionate child, gladden the heart of a parent, especially when sinking under age and infirmities!

How can we spend our time foolishly, when we know that we must give an account hereafter, of our thoughts words and actions?